डॉ. विजय मिश्र

हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित भौतिक विज्ञानी एवं संस्कृत विद्वान। कवि के तौर पर न्यू इंग्लैंड, दक्षिण एशिया के अनेक देशों में चर्चित एवं सफल यात्राएँ कीं। अनेक गरिमापूर्ण कवि सम्मेलनों में भागीदारी। विगत 18 बरसों से हार्वर्ड विश्वविद्यालय में सालाना भारतीय कविता पाठ का आयोजन कर रहे हैं।

सम्पर्क : 180, बेडफोर्ड रोड, Lincoln, MA, USA ईमेल : misra.bijoy@gmail.com

व्याख्या

वाल्मीकि रामायण : आधुनिक विमर्श-42

लंकायुद्ध, सीता का उद्धार-7

हिंदी अनुवाद : मनीष श्रीवास्तव

विश्व में बुराई क्यों पनपती है, क्योंकि यह संभव है और इसे धोखे और छल से फैलाया जाता है। बलपूर्वक लोगों को अपने अधीन कर लेने से पाप का सञ्चालन होता है। शासन के द्वारा किसी की स्वाधीनता और स्वतंत्रता छीन लेना ब्रह्मांड की प्राकृतिक व्यवस्था के विपरीत है। एक बार जब कोई इंसान स्वार्थी हो जाता है, तो अनियमित मन उसकी कार्यप्रणाली को नियंत्रित करता है। त्रुटियां बढ़ जाती हैं और उसके विनाश का कारण बनती हैं। रावण इसका अपवाद नहीं था।

रावण को विश्वास नहीं हो रहा था कि राम और लक्ष्मण इंद्रजीत के नागपाश से मुक्त हो चुके हैं। वह परेशान था कि अब उसका अमरत्व संशय में था। उसने धूम्राक्ष नामक एक शक्तिशाली सेनानायक को दोनों भाइयों की टोह लेने का आदेश दिया। धूम्राक्ष ने आदेश का पालन किया और विभिन्न अस्त्र-शस्त्रों से लैस राक्षसों की एक विशाल सेना के साथ आगे बढ़ा। गधों द्वारा खींचे जाने वाले एक सोने के रथ पर सवार होकर उसने पश्चिमी द्वार से युद्ध के मैदान में प्रवेश किया।

वह हनुमान का सामना करना चाहता था। वानर भी उसका मुकाबला करने के लिए समान रूप से उत्सुक थे। एक भयानक युद्ध हुआ। एक तरफ शस्त्रों से सुसज्जित राक्षस सेना और दूसरी तरफ चट्टानों और वृक्षों के साथ वानर सेना। वानरों ने राक्षस सेना को तहस-नहस कर डाला। हालांकि कुछ वानर सैनिक भी इस युद्ध में मारे गए। हनुमान ने एक विशालकाय पत्थर फेंका और धूम्राक्ष के रथ को चकनाचूर कर दिया। फिर हनुमान ने एक पर्वत शिखर के समान एक बड़ी नुकीली चट्टान फेंककर धूम्राक्ष का वध कर डाला।

रावण ने सेनानायक बज्रदमस्त्र को वानरों का मुकाबला करने का आदेश दिया। उसने शक्तिशाली सैनिकों को एकत्र किया और दक्षिणी द्वार से बाहर निकल गया। उनका सामना अंगद से हुआ। अंगद ने अपने वृक्ष और पत्थरों का प्रक्षेपास्त्र जैसा उपयोग करते हुए राक्षसों को मार गिराया, फिर अपनी तलवार से बज्रदमस्त्र का सिर धड़ से अलग कर दिया।

क्रोधित रावण ने अपने शक्तिशाली सेनानायक अकम्पन को युद्ध के मैदान में प्रवेश करने का आदेश दिया ताकि "राम-लक्ष्मण और वानरराज सुग्रीव को कुशलतापूर्वक खत्म किया जा सके।" अकम्पन की सेना ने वानर सेना से युद्ध किया। वानरों में से कुमुद, नल, मैंद और द्विविद ने

घमासान युद्ध किया। पूरा आकाश भूरे रंग की धूल के बादल से ढंक गया। अकम्पन ने बहुत सारे वानरों का वध कर डाला। अकम्पन को सफल होते देख हनुमान भी इस युद्ध में उतर पड़े। वे वृक्षों को शस्त्र के रूप में उपयोग कर रहे थे। हनुमान ने एक विशाल वृक्ष से अकम्पन के सिर पर वार किया और वो वहीं धराशायी हो गया।

रावण एक कुशल रणनीतिकार की भांति अपने मुख्य सेनानियों को शामिल करके नियंत्रण स्वयं लेना चाहता था। उन्होंने सेनानायक प्रहस्त को तैयार होने की सलाह दी। रावण ने कहा, "एक औसत जीवन जीने से अच्छा है कि एक साहसिक कार्य में वीरगति को प्राप्त करना!" प्रहस्त ने उत्तर दिया : "सीता को राम को न लौटा करके यह युद्ध होना निश्चित था।" उसे वास्तविकता का ज्ञान था। फिर उसने कहा, "आपकी मुझपर विशेष कृपा रही है। मैं आपके हित के लिए लड़ूंगा!" प्रहस्त ने एक विशाल सैन्य बल के साथ युद्ध में प्रवेश किया। राम ने विभीषण से प्रहस्त के बारे में पूछा। विभीषण ने प्रहस्त की वीरता के बारे में बतलाया। किन्तु वह कुशल योद्धा नील से नहीं बच पाया। नील प्रहस्त के सिर पर एक विशाल चट्टान से प्रहार करने में सफल रहा! इस तरह प्रहस्त भी मर गया।

प्रहस्त की मृत्यु से रावण चकरा गया। वह असहाय सा दिख रहा था। "हमें शत्रु की शक्ति को कम नहीं आंकना चाहिए। मुझे आज ही युद्धभूमि में उतरना होगा! मैं पूरी पृथ्वी को वानरों के रक्त से लाल कर दूँगा!" इस प्रतिज्ञा और पूरे राजसी ठाठ बाट के साथ वह युद्ध में प्रवेश कर गया। रावण ने वानर सेना को काफी क्षति पहुँचाई और लक्ष्मण को घायल कर दिया। राम ने अंततः उसे वश में कर लिया, किन्तु उसे लंका में वापस जाने दिया। राम ने संभवतः सोचा था कि रावण को समझ में आ जाएगा और वह सीता को वापस कर देगा। यह असंभव था।

रावण के मन में ये विचार उठ रहे थे। "मेरी तपस्या और प्रार्थनाओं के प्रभाव से मनुष्यों को छोड़ अन्य कोई भी जीव जंतु मेरा कुछ नहीं कर सकते! क्या यह तुच्छ मानव राम मेरा अंत कर देगा?" उसने अपने भाई कुंभकर्ण को उठने का आदेश दिया। कुंभकर्ण ने युद्ध के मैदान में प्रवेश किया। भयानक आंधी चली और वानर सेना भाग खड़ी हुई! कुंभकर्ण ने वानरसेना को बड़े पैमाने पर क्षति पहुंचायी। अंततः राम ने उसका संहार किया। कुंभकर्ण का कटा हुआ सिर समुद्र में गिरा और विभिन्न जल जंतुओं को कुचलता हुआ समुद्र की गहराई में समा गया।

रावण के पुत्र नरांतक, देवांतक, त्रिसिर और अतिकाय

रावण के मन में ये विचार उठ रहे थे। "मेरी तपस्या और प्रार्थनाओं के प्रभाव से मनुष्यों को छोड़ अन्य कोई भी जीव जंतु मेरा कुछ नहीं कर सकते! क्या यह तुच्छ मानव राम मेरा अंत कर देगा?"

अपने पिता के साथ सहानुभूति रखते थे। उन्होंने अपने पिता को अपनी शक्ति प्रदर्शन का आश्वासन दिया। नरान्तक युद्ध में अंगद द्वारा मारा गया। हनुमान ने देवांतक और त्रिसिर का अंत किया। अतिकाय बहुत बहादुरी से लड़ा और अंततः लक्ष्मण के हाथों मारा गया। इस बार, रावण बहुत घबरा गया। उसने अपने रक्षकों को वानर घुसपैठियों के प्रति सीता पर नजर रखने के लिए सतर्क कर दिया। "संध्या, आधी रात और सूर्योदय के समय उन पर दृष्टि बनाये रखो। हर पल सतर्क रहो!"

रावण का वीर पुत्र इंद्रजीत सदैव रावण के साथ था। "पिताजी आप बिलकुल निराश न हों, जब तक इंद्रजीत जीवित है तब तक आप सुरक्षित हैं!" वरदान में प्राप्त ब्रह्मास्त्र का आह्वाहन करने के लिये इन्द्रजीत ने अनुष्ठान आरम्भ किया। उचित दीक्षा और मंत्रोच्चार के साथ छोड़ा गया अस्त्र अचूक था। इंद्रजीत ने युद्ध में प्रवेश किया और अपना ये दिव्य अस्त्र चलाया। पांच दिनों में सड़सठ करोड़ वानर लहूलुहान हो मूर्छित हो गए। राम और लक्ष्मण भी गंभीर रूप से घायल हो गए।

जाम्बवान के निर्देशानुसार हनुमान हिमालय की ओर बढ़े और जीवन रक्षक औषधीय पौधों को लेकर आए। जड़ी बूटियों के उपचार के माध्यम से वानरों को पुनः जीवित किया गया। जड़ी-बूटियों के उपयोग से राम और लक्ष्मण भी ठीक हो गए। सुग्रीव ने वानरों को लंका पर आक्रमण करने का आदेश दिया। हाथ में मशालें लिए वानरों ने लंका में प्रवेश किया और पूरे नगर में आग लगा दी। बड़े पैमाने पर युद्ध हुआ। बहुत सारे वानर मारे गए और लंका दूसरी बार जली।

कुंभकर्ण के दोनों पुत्र - कुंभ और निकुम्भ के साथ-साथ कई अन्य राक्षस, युपक्ष, सोनिताक्ष, प्रजम्घ और

संभवतः जीवन में सफलता, स्वार्थ और अहंकार की ओर ले जाती है। फिर समाज के ऊँच-नीच की कोई दृष्टि नहीं रह जाती। कुछ लोगों का मानना है कि उनके पास अपने भाग्य को बस में करने का विशेषाधिकार है और उन्हें किसी बड़ी हानि और दुर्भाग्य की कोई चिंता नहीं होती।

कम्पन उग्र रूप से युद्ध भूमि में कूद पड़े। उनका उत्साह बहुत देर तक नहीं रहा। सुग्रीव, अंगद और हनुमान ने उनका वध किया। मैंद और द्विविद जैसे विशाल वानरों ने राक्षस सेना को बहुत क्षति पहुचाई। तब रावण ने खर के पुत्र मकराक्ष को बुलाया। खर को राम ने पंचवटी के निकट जनस्थान वन में मार गिराया था। "मैं प्रतिशोध लेने के लिए तैयार हूँ, राम!" मकराक्ष चिल्लाया। राम का तीर बिजली की भाँति उसके हृदय को बेंधता निकल गया। उसकी वहीं मृत्यु हो गयी।

यह स्पष्ट नहीं है कि कुशाग्रता दुराचार से कैसे जुड़ी हुई है। संभवतः जीवन में सफलता स्वार्थ और अहंकार की ओर ले जाती है। फिर समाज के ऊँच-नीच की कोई दृष्टि नहीं रह जाती। कुछ लोगों का मानना है कि उनके पास अपने भाग्य को बस में करने का विशेषाधिकार है और उन्हें किसी बड़ी हानि और दुर्भाग्य की कोई चिंता नहीं होती। रावण भी ऐसा ही था। वर्षों की तपस्या और तंत्र विद्याओं के बल से उसने अधिकांश शत्रुओं को मात देने का कौशल हासिल किया था। यद्यपि राम एक अपवाद साबित हुए। रावण को युद्ध के मैदान में अपनी हानि के संकेत नहीं दिख रहे थे और वह इस झूठी आकांक्षा के साथ युद्ध की तैयारी कर रहा था कि वह जीत सकता था! मनुष्य में वासना खतरनाक है। इसकी कोई सीमा नहीं होती!

रावण ने इंद्रजीत को अपने चमत्कारी अस्त्रों को प्राप्त करने और राम और लक्ष्मण को युद्ध में संलग्न करने के लिए प्रोत्साहित किया। इंद्रजीत ने युद्ध के लिए एकाग्रता हासिल करने प्रयास किया। वह खुद को अदृश्य करने में सफल रहा। राम के बाण युद्ध भूमि में चारों दिशाओं से आ रहे थे, लेकिन इंद्रजीत दिखाई नहीं दे रहा था। यह देखते हुए कि राम को जीता नहीं जा सकता, इंद्रजीत ने एक सीता का प्रतिरूप बनाया, जो पूरी तरह से असली के समान था। उसने प्रतिरूप अपने रथ पर रखा, क्रूर यातना के संकेत देते हुए नकली सीता का वध कर दिया। खबर का निराशाजनक प्रभाव स्वाभाविक था। यह समाचार सुनकर राम मूर्छित हो गए। उन्हें मूर्छित देख लक्ष्मण और विभीषण उनके पास पहुंचे और उन्हें राक्षसों के इस मायाजाल को समझाया। "सीता की मृत्यु उतनी ही बेतुकी है जितनी सागर को सुखाना! रावण उनके वध की अनुमति कभी नहीं देगा!" विभीषण ने सांत्वना दी।

उन्होंने आगे कहा : "इंद्रजीत निकुंभिला के जंगल में अनुष्ठानों में व्यस्त है। यदि वह अनुष्ठान को पूरा करने में सफल होता है, तो वह कुल अदृश्यता की शक्ति प्राप्त कर लेगा और अजेय हो जाएगा। हमें उसे रोकने के लिए सभी प्रयास करने चाहिए। लक्ष्मण सेना कि एक टुकड़ी लेकर तुरंत आगे बढ़ें और इस आवश्यक कार्य को पूरा करें!" राम की अनुमति से, लक्ष्मण, हनुमान और जाम्बवान के साथ आगे बढ़े। इंद्रजीत और उसकी राक्षस सेना ने वीरता पूर्वक युद्ध किया, किन्तु अंततः उन्हें वश में कर लिया गया। लक्ष्मण ने इंद्रजीत के रथ को नष्ट कर दिया। उसके घोड़ों को मार डाला और सारथी का सिर काट दिया। इंद्रजीत ने रथ बदला और अधिक हिंसक हो गया। लक्ष्मण ने मंत्रोच्चार किया "पूज्य श्री राम के नाम पर, यह दिव्य अस्त्र रावण के पुत्र का संहार कर देगा!" और ऐन्द्रास्त्र छोड़ दिया और इंद्रजीत को मार गिराया।

इंद्रजीत के मरते ही वानरों में प्रसन्नता कि लहर दौड़ गयी। राक्षस सेना गायब हो गयी "जैसे सूर्यास्त के बाद प्रकाश गायब हो जाता है! आसमान साफ हो गया और हवा शांत हो गई। देवता पुष्प वर्षा कर रहे हैं! गुनी जन चिंता के बिना यात्रा कर सकते हैं!" विभीषण, हनुमान और जाम्बवान के साथ रक्त रंजित लक्ष्मण राम से मिले। विभीषण ने लक्ष्मण की वीरता का वर्णन किया। राम अपने भाई के प्रति उदासीन थे, उन्हें गले लगाया और उनका आभार व्यक्त किया। "इंद्रजीत को मारना, रावण को मारने के बराबर है!" उन्होंने प्रशंसा की। उन्होंने वानरों के चिकित्सक सुषेण को घावों का उपचार करने में मदद करने का आदेश दिया। सभी का प्राकृतिक जड़ी बूटियों से उपचार किया गया और सभी पुनः स्वस्थ हो गए! ■